

अन्तिकाल : हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग

हिन्दी साहित्य के इतिहास में अन्तिकाल को स्वर्णयुग भी खंजा दी गयी है क्योंकि इस काल की रचनाओं में स्तौष्ट्य, लालित्य चमत्कारिता और अलंकारिता आदि से पूर्ण आद्वितीय प्रमाण उपलब्ध है। भावपक्ष और कलापक्ष दोनों ही दृष्टि से इस काल की रचनाएँ श्रेष्ठ हैं। डॉ० इजाम हुंटर का सही शब्दों में — "जिस युग में कबीर, तुलसी, धूर, जगन्नी जैसे प्रसिद्ध कवियों और मल्लाहों की कविता वाणी उनके कले-कर्मों से निकलकर देश के कोने-कोने में फैली थी, उसे साहित्य के इतिहास में आमान-मनः आन्तिकयुग कहते हैं। निश्चय ही वह हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग था।" इतिहास में जिसे स्वर्णयुग भी खंजा दी जाती है, वह दार्ष्टिक और सांस्कृतिक दृष्टि से पूर्ण होता है और साहित्य के स्वर्णयुग तो काल्यखौन्दर्य से पूर्ण होता ही है, जीवन को अधिक गहराई से स्पर्श करनेवाला तो होता है।

अन्तिकाल को स्वर्णयुग कहने में मुख्य योगदान वैष्णव कवियों का है। ये वैष्णव न कि हिन्दी भारती के कुँठमाल हैं। इस काल की निम्न उपलब्धियाँ हैं जो इसे स्वर्णयुग से विशिष्ट करती हैं: -

1. काल्य खंखी दृष्टिभोग की उदात्तता
2. भावपक्ष तथा कलापक्ष का भणिरांचन योग
3. भारतीय संस्कृति का सम्यक् निरूपण
4. संगीतात्मकता का सन्निवेश
5. लोक गंगल तथा लोक रंजन का आधान
6. काल्यरूपों की विविधता
7. भाषागत वैशिष्ट्य

अन्तिकालीन साहित्यकार का काल्य खंखी दृष्टिभोग उदात्तता से भरपूर है। अन्तिकालीन ने न तो किसी राज की प्रशंसा की और न ही अपनी वाणी से किसी अज्ञान जन का गुणगान किया बल्कि उनका काल्य

सृजन तो काल कक्षिप्रेरण पर आधारित था। तुलसी कविता के द्वारा प्रसिद्ध नहीं हुए बालक कविता तुलसी के द्वारा प्रसिद्ध हुई। इस काल में साहित्य के दोनों पक्ष भाषा एवं कला का सुंदर समंजस रूप देखने को मिलता है। कवीर, जायसी, मूर तुलसी, मीरा रचखान, हित हरिवंश मंदहास, नानक की रचनाओं पर हिन्दी साहित्य विश्व साहित्य के सम्मुख गर्व महसूस करता है।

भक्ति कालीन काल रचनाओं में मध्यकालीन भारतीय संस्कृति के सम्यक् ज्ञान, धर्म, दर्शन, सभ्यता, व्यवहार एवं विचार का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। इसके कलेवर में लगुण-निर्गुण, भक्ति योग, दार्शनिकता-साध्यात्मिकता और सादर जीवन के मूल्य चित्र समाहित हैं। इसमें सभी धर्मों की स्तुति एवं जीवन में समरसता के साथ आनन्दत्व की प्राप्ति की बात कही गयी है।

भक्ति काल के काल में संगीतकला के सन्निवेश के लिए हिंदी कालाभिव्यंजना, लोचानुवर्ति, सहस्रश्रुति और अंतःप्रेरण की आवश्यकता होती है, वह भक्तकविओं में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध थी। मूर के गीतिभावों में जो मधुरता है वह हृदयग्राही है। इस काल के लगभग सभी साहित्यकारों ने अपने काल रचनाओं में राग-रागिनियों का सुंदर एवं विलक्षण प्रयोग किया है। काल रूप में काफी विविधता भी है। कविशाल और रीतिकाल काल के विविध सृजन में भक्ति काल से न्यून है। भक्ति काल में एवंध काल, मुक्तककाल, प्रार्थनाकाल, गीतकाल, जीवनपरित, गद्यकाल, संगीतकाल और उपदेशकाल पर्याप्त मात्रा में लिखे गये हैं।

भक्ति कालीन साहित्य में साहित्यकारों ने ईश्वरीय भक्ति के साथ-साथ लोकमंगल एवं लोकसंजन का भी पूर्ण ध्यान रखा है। हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए भी काफी प्रयास किया। जायसी ने हिन्दुओं की कथा की मुसलमानों के लिए और मुसलमानों के कथा को हिन्दुओं के लिए ग्राही बनाया। बडल से मुसलमानों ने हिन्दी सीखी तो

Notes

Date _____

सनेह हिन्दुओं ने उर्फ। शूर का वास्तव्य तो जगजाहिर है। अपना ही नहीं भास्ति काव्य मन, हृदय और भावना तीनों की श्रवण एव ही वार में आता कर देता है। इस काल में भाषा अवधि एवं सज्जन अपने-परे सीमा पर थी। इस काल के कवियों ने भाषा को सुव्यवस्थित एवं सुसंस्कृत किया।

कुलमिलाकर भास्ति काव्य तत्कालीन जनता का ही नहीं साप्ताहिक स्वागत का भी उच्चा मक, प्रेरक तथा उद्देश्य है। इसमें भास्ति का संस्कृति-सादर के अग्रगण्य एवं मूल्य निम्न कंकित हैं। भास्ति काव्य राम, राम, गिरधर, गोपाल, कलशुनिर्जक और एक जोर का स्मारक है, जो आज भी हिन्दू जन-जीवन के लिए अतः स्मरणोपम है। इसी कारण यह काल हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग है।